International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 11-07-2024, Accepted: 10-08-2024, Published: 26-08-2024
Volume 6, Issue 2, 2024, Page No. 18-20

एम एन रॉय तथा कार्ल मार्क्स के मानववाद में समानताएं तथा असमानताएं

Anamika Pandey
Research Scholar, Department of Philosophy, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh, India

सारांश
यह शोधपत्र 19वीं और 20वीं सदी के दो प्रभावशाली विचारकों कार्ल मार्क्स और एम.एन. रॉय के मानवतावादी विचारों के बीच समानताओं और अंतरों की खोज करता है। जहाँ मार्क्स को व्यापक रूप से साम्यवाद का संस्थापक माना जाता है, वहीं रॉय कट्टरपंथी मानवतावादी आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे। अपनी अलग–अलग विचारधाराओं के बावजूद, दोनों विचारकों ने मानवतावाद के प्रति प्रतिबद्धता साझा की, और मानव द्वारा एक बेहतर दुनिया बनाने की क्षमता पर विश्वास किया। यह शोधपत्र मानव स्वभाव, अलगाव, व्यक्तिगत एजेंसी और सामाजिक परिवर्तन पर मार्क्स और रॉय के विचारों के बीच समानताओं और अंतरों की जाँच करता है। उनके विचारों के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से, यह शोधपत्र समकालीन समाज में मानवतावादी विचारों की चल रही प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है और विभिन्न मानवतावादी परंपराओं के बीच संवाद और आदान–प्रदान के महत्व को रेखांकित करता है।

मूल्य शब्दः एम. एन. रॉय, मानवतावाद, साम्यवाद, कट्टरपंथी मानवतावाद

कार्ल मार्क्स के सामान एम० एन० राय भी भारत की समस्याओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाते हैं। जहाँ मार्क्स को व्यापक रूप से साम्यवाद का संस्थापक माना जाता है, वहीं रॉय कट्टरपंथी मानवतावादी आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे। अपनी अलग–अलग विचारधाराओं के बावजूद, दोनों विचारकों ने मानवतावाद के प्रति प्रतिबद्धता साझा की, और मानव द्वारा एक बेहतर दुनिया बनाने की क्षमता पर विश्वास किया। एम० एन० राय मार्क्स के विचारों के प्रमुख समर्थकों में से प्रारम्भ में रहते है। वे मार्क्स के विचारों का प्रचार भारत तथा एशिया के अन्य देशों में करना चाहते है और इसी दृष्टिकोण से अपने विचारों को मार्क्स के तुलनात्मक रखने का प्रयास करते है। राय मार्क्सवादी विचारों से पूर्णरूपेण प्रभावित रहते है और इसी के अनुरूप अपने विचारों की व्याख्या भी करते है, लेकिन सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक घरातल पर अति मानववादी होने के कारण मार्क्स के विचारों में यथोचित बदलाव भी चाहते है और इसी परिणाम स्वरूप वे "नव–मानववाद" का विचार भी प्रस्तुत करते हैं। मार्क्सवाद और एम० एन० राय का उग्र (रेडिकल) मानवतावाद सारी समस्याओं के समाधान का सिद्धान्त है। जहाँ सम्पूर्ण विश्व के लिए मार्क्सवाद एक नई विचारधारा का सूत्रपात करता है, वही भारतीय राजनीति में उग्र मानवतावाद भी एक नये विचार धारा का सुत्रपात करता है। इसके पहले तक भारतीय समाज आध्यात्मिकता, धार्मिकता, अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा आदि से ग्रस्त रहता है। ब्रह्म समाज, आर्य समाज आदि धार्मिक आन्दोलनों से भी इन समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता था। भारत की सामाजिक समस्याएँ ही मुख्य राष्ट्रीय समस्याएँ थी, अतएव भारत का यथोचित विकास भी समयानुसार नहीं हो सकता था। राय ने सामाजिक पतन के लिए जिम्मेदार तत्कालीन राजनीतिज्ञों को ठहराया। इन्होंने माना कि अभी तक सभी नेताओं ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए सभी कार्य किया है, उसी से अभी तक राष्ट्रीय विकास नहीं हो सका है। राय ने समाजिक समस्याओं के समाधान पर बल दिया। मार्क्स के मानवतावाद को अक्सर पूंजीवाद की उनकी अधिक प्रसिद्ध आलोचनाओं के पक्ष में अनदेखा कर दिया जाता है। हालाँकि, उनके शुरुआती कार्य, जैसे कि 1844 की आर्थिक और दार्शनिक कृतियां, मानव क्षमता और पूंजीवाद द्वारा इसे दबाने के तरीकों के बारे में एक गहरी चिंता प्रकट करती हैं। मार्क्स की "अलगाव" की अवधारणा दृ यह विचार कि पूंजीवाद मानव को मात्र वस्तुओं में बदल देता है दृ एक मौलिक रूप से मानवतावादी आलोचना है। दूसरी ओर, रॉय भारत में कट्टरपंथी मानवतावादी आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे। उनके दर्शन ने सामाजिक परिवर्तन लाने में व्यक्तिगत पहल और आलोचनात्मक सोच के महत्व पर जोर दिया। रॉय का मानवतावाद मार्क्स जैसे पश्चिमी विचारकों से अत्यंत प्रभावित था, लेकिन इसने भारतीय विचारधाराओं की परंपराओं को भी अपनाया। राय ने यह अनुभव किया कि बहुत से विचारधारा और दर्शन पतन की तरफ गये। इसका मुख्य कारण उनका अमानवीय और कठोर प्रवृत्ति है। इसलिए उन्होंने नवमानवतावाद को एक सरल दार्शनिक रूप दिया। नवमानववाद किसी भी रूप में एक बन्द व्यवस्था नहीं हो सकती है। यह मानव जाति के अनुभवों पर आधारित है। यह मानवीय ज्ञान के साथ ही साथ बढ़ेगा और विकसित होगा। राय ने अपने मानवतावाद को नवीन इसलिए कहा क्योंकि वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि उनका मानववाद पूर्ववर्ती और समकालीन सभी विचार के प्रतिपादित मानववाद से भिन्न है।[2]

अपने मतभेदों के बावजूद, मार्क्स और रॉय दोनों ने मानवतावाद के प्रति प्रतिबद्धता साझा की। उनका मानना था कि मनुष्य में एक बेहतर दुनिया बनाने की क्षमता है, और यह क्षमता दमनकारी सामाजिक व्यवस्थाओं द्वारा दबा दी जाती है। मानवीय क्षमता पर जोर इन दोनों विचारकों के मानवतावादी विचारों का एक मूलभूत पहलू है। उनका मानना था कि मनुष्य में आत्म–अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और विकास की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, और यह प्रवृत्ति दमनकारी सामाजिक व्यवस्थाओं द्वारा दबा दी जाती है।इस विश्वास ने उन्हें यह तर्क देने के लिए प्रेरित किया कि मनुष्य महान चीजें हासिल करने में सक्षम हैं, लेकिन वे समाज की बाधाओं से पीछे रह जाते हैं। उन्होंने मानवीय क्षमता को असीम माना, और माना कि व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को पूरी तरह से विकसित करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। एक विचारक ने पूंजीवाद के अलगावकारी प्रभावों को मानवीय क्षमता के लिए एक बड़ी बाधा के रूप में देखा, यह तर्क देते हुए कि मनुष्य को केवल वस्तुओं में बदल देने से उनकी रचनात्मकता और व्यक्तित्व का हनन होता है। दूसरे विचारक ने उपनिवेशवाद और पारंपरिक सामाजिक मानदंडों की दमनकारी प्रकृति को मानवीय क्षमता के लिए एक बड़ी बाधा के रूप में देखा, यह तर्क देते हुए कि ये व्यवस्थाएँ व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को विकसित करने की स्वतंत्रता से वंचित

करती हैं। दोनों विचारकों का मानना था कि मानवीय क्षमता को केवल अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज के निर्माण के माध्यम से ही साकार किया जा सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि व्यक्तियों को दमनकारी सामाजिक व्यवस्थाओं द्वारा विवश हुए बिना अपनी प्रतिभा और योग्यताओं को विकसित करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए। राय मानव की उच्चता को स्वीकार करते हैं राय के लिए मानव सबका केन्द्र है। पुर्नजागरण के पूर्व मानव अपनी सामंजस्यता के लिए संर्घषशील रहा है। पुर्नजागरण के बाद उसकी वास्तविकता स्पष्ट होती है। मानव की उच्चता ने उन सभी प्राचीन मान्यताओं को खण्डित कर दिया जिनके द्वारा मानवीय शक्ति का पूर्ण विकास नहीं हो पा रहा था। मानवीय कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए राय मानवीय अधिकारों पर बल देते हैंङ। कार्ल मार्क्स मनुष्य को न तो पूर्णतः प्रकल्पित प्रकृति में और न पूर्णतः प्रकल्पित समाज की समग्रता में देखती है, उसने उसे मानवीय व्यवहार में देखा और उसका उद्देश्य एक ऐसे मानवीय समाज की स्थापना है, जिसमें हर व्यक्ति की स्वतंत्रता सबकी स्वतंत्रता की शर्त बन जाती है।[4] मानव क्षमता पर यह जोर सामाजिक परिवर्तन लाने में व्यक्तिगत एजेंसी और मानवीय रचनात्मकता के महत्व को उजागर करता है। यह सुझाव देता है कि व्यक्तियों के पास अपनी नियति को आकार देने और एक बेहतर दुनिया बनाने की शक्ति है, न कि केवल यथास्थिति को स्वीकार करना। इसके अलावा, मानवीय क्षमता पर यह जोर शिक्षा और व्यक्तिगत विकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है। दोनों विचारकों का मानना था कि व्यक्तियों को अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए शिक्षित और सशक्त होना चाहिए, और इसके लिए समाज में एक मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है।

एम.एन. रॉय और कार्ल मार्क्स दोनों ही सामाजिक परिवर्तन लाने में वर्ग संघर्ष के महत्व में विश्वास करते थे, लेकिन वर्ग संघर्ष की भूमिका पर उनके विचार कुछ महत्वपूर्ण तरीकों से भिन्न थे।मार्क्स के लिए, वर्ग संघर्ष ऐतिहासिक परिवर्तन का प्राथमिक चालक था। उनका मानना था कि विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच संघर्ष, विशेष रूप से पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बीच, इतिहास का इंजन था। मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा, जिसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच विरोधाभास मानव चेतना और सामाजिक संगठन के एक नए, उच्च स्तर के उद्भव की ओर ले जाता है। सर्वहारा द्वारा अपने उत्पीड़न और शोषण के विरूद्ध संघर्ष में मार्क्स ने उसकी और सम्पूर्ण मानवता की मुक्ति देखी। समाजवादी समाज में व्यक्ति एक ही कार्य में नहीं लगा रहेगा बल्कि वह एक से अधिक कार्यों में लगने का अवसर पायेगा।[5]

इसके विपरीत, एम.एन. रॉय ने वर्ग संघर्ष को मानव मुक्ति के व्यापक संघर्ष के सिर्फ़ एक पहलू के रूप में देखा। रॉय का मानना था कि वर्ग संघर्ष महत्वपूर्ण था, लेकिन उन्होंने व्यक्तियों द्वारा अपनी आलोचनात्मक चेतना विकसित करने और दमनकारी सामाजिक व्यवस्थाओं को चुनौती देने के लिए कार्रवाई करने की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया। रॉय का दृष्टिकोण सामूहिक कार्रवाई और वर्ग संघर्ष के बजाय व्यक्तिगत पहल और मानवीय रचनात्मकता पर अधिक केंद्रित था। इन मतभेदों के बावजूद, मार्क्स और रॉय दोनों ने वर्ग संघर्ष को उत्पीड़न पर काबू पाने और सामाजिक न्याय प्राप्त करने के एक आवश्यक साधन के रूप में देखा। वे दोनों मानते थे कि मौजूदा सामाजिक व्यवस्था शोषण और उत्पीड़न पर आधारित है, और अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण दुनिया बनाने के लिए समाज में मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता है। वर्ग संघर्ष पर मार्क्स के विचार अलगाव की उनकी अवधारणा से काफी प्रभावित थे, जिसे वे पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा मनुष्यों को मात्र वस्तुओं में बदल देने के परिणाम के रूप में देखते थे। मार्क्स का मानना था कि अलगाव को दूर करने और मानव मुक्ति प्राप्त करने के लिए वर्ग संघर्ष आवश्यक था। दूसरी ओर, वर्ग संघर्ष पर रॉय के विचार व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता पर उनके जोर से अधिक प्रभावित थे। रॉय का मानना था कि व्यक्तियों को अपनी मुक्ति की जिम्मेदारी खुद लेनी चाहिए, और वर्ग संघर्ष मानव मुक्ति के इस व्यापक संघर्ष का सिर्फ एक पहलू है। कुल मिलाकर, जबकि मार्क्स और रॉय दोनों ने वर्ग संघर्ष को सामाजिक परिवर्तन लाने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा, वर्ग संघर्ष की भूमिका पर उनके विचार कुछ महत्वपूर्ण तरीकों से भिन्न थे।

कार्ल मार्क्स और एम.एन. रॉय दोनों ने सामाजिक परिवर्तन लाने में व्यक्तिगत एजेंसी के महत्व पर जोर दिया, लेकिन व्यक्तिगत एजेंसी की भूमिका पर उनके विचार कुछ महत्वपूर्ण तरीकों से भिन्न थे। मार्क्स के लिए, व्यक्तिगत एजेंसी को सामाजिक परिवर्तन के लिए एक आवश्यक लेकिन पर्याप्त शर्त नहीं माना जाता था। मार्क्स का मानना था कि व्यक्तियों को अपने शोषण और उत्पीड़न के प्रति सचेत होना चाहिए, और प्रमुख सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देने के लिए कार्रवाई करनी चाहिए। हालाँकि, मार्क्स का यह भी मानना था कि व्यक्तिगत एजेंसी सामूहिक और वर्ग–आधारित होनी चाहिए, क्योंकि अकेले व्यक्ति पूंजीवाद की संरचनात्मक बाधाओं को दूर नहीं कर सकते। इसके विपरीत, एम.एन. रॉय ने व्यक्तिगत एजेंसी और पहल पर अधिक जोर दिया। रॉय का मानना था कि व्यक्तियों के पास अपने भाग्य को आकार देने और अपने प्रयासों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन करने की शक्ति है। रॉय ने उत्पीड़न पर काबू पाने और मानव मुक्ति प्राप्त करने में व्यक्तिगत एजेंसी को एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा।

इन मतभेदों के बावजूद, मार्क्स और रॉय दोनों इस बात पर सहमत थे कि सामाजिक परिवर्तन लाने में व्यक्तिगत एजेंसी महत्वपूर्ण है। वे दोनों मानते थे कि व्यक्तियों को अपनी मुक्ति की जिम्मेदारी लेनी चाहिए और अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। सामूहिक कार्रवाई और वर्ग संघर्ष पर मार्क्स का जोर उनके इस विश्वास से प्रेरित था कि पूंजीवाद एक प्रणालीगत और संरचनात्मक मुद्दा है जिसे अकेले व्यक्तिगत कार्रवाई से दूर नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत, रॉय का व्यक्तिगत एजेंसी पर जोर मानव रचनात्मकता और उत्पीड़न के सबसे जड़ जमाए हुए रूपों को भी दूर करने की पहल की शक्ति में उनके विश्वास से प्रेरित था।, मार्क्स और रॉय दोनों ने व्यक्तिगत एजेंसी को सामाजिक परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में देखा, लेकिन व्यक्तिगत एजेंसी की भूमिका पर उनके विचार सामूहिक कार्रवाई और वर्ग संघर्ष बनाम व्यक्तिगत पहल और रचनात्मकता पर जोर देने के संदर्भ में भिन्न थे।

दोनों विचारकों का मानना था कि मानव स्वतंत्रता सामाजिक परिवर्तन का अंतिम लक्ष्य है। मार्क्स ने तर्क दिया कि साम्यवाद मानव स्वतंत्रता की पूर्ण प्राप्ति की अनुमति देगा, जबकि रॉय का मानना था कि कट्टरपंथी मानवतावाद मानव क्षमता की पूर्ण प्राप्ति की अनुमति देगा। मार्क्स और रॉय दोनों ने दमनकारी सामाजिक व्यवस्थाओं को बनाए रखने के साधन के रूप में पारंपरिक नैतिकता की आलोचना की। मार्क्स ने तर्क दिया कि पारंपरिक नैतिकता वर्ग हितों पर आधारित है, जबकि रॉय ने तर्क दिया कि पारंपरिक नैतिकता वर्चस्व और उत्पीड़न पर आधारित है । दोनों विचारकों का मानना था कि सामाजिक परिवर्तन लाने में मानव रचनात्मकता का महत्व है। मार्क्स ने तर्क दिया कि मनुष्य में आत्म–अभिव्यक्ति और रचनात्मकता की ओर एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, जबकि रॉय का मानना था कि मनुष्य में आत्म–साक्षात्कार और विकास की ओर एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है।

मार्क्स ने मनुष्य को स्वाभाविक रूप से सामाजिक माना, जबकि रॉय ने मनुष्य को स्वाभाविक रूप से व्यक्तिगत माना। मार्क्स का मानना था कि मनुष्य अपने सामाजिक संदर्भ से आकार लेता है, जबकि रॉय का मानना था कि मनुष्य में एक अद्वितीय क्षमता होती है जिसे उसके सामाजिक संदर्भ तक सीमित नहीं किया जा सकता। मार्क्स ने सामाजिक परिवर्तन लाने में वर्ग संघर्ष की भूमिका पर जोर दिया, जबकि रॉय ने व्यक्तिगत पहल की भूमिका पर जोर दिया। मार्क्स का मानना था कि सर्वहारा वर्ग एक समाजवादी समाज बनाने के लिए पूंजीपति वर्ग के खिलाफ उठ खड़ा होगा, जबकि रॉय का मानना था कि व्यक्तियों को सामाजिक परिवर्तन लाने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। मार्क्स ने इतिहास को एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा, जबकि रॉय ने इतिहास को मानव प्रगति की एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में देखा। मार्क्स का मानना था कि इतिहास वर्ग संघर्ष से आकार लेता है, जबकि रॉय का मानना था कि इतिहास व्यक्तिगत पहल और मानवीय रचनात्मकता से आकार लेता है।

मार्क्स धर्म के आलोचक थे, इसे दमनकारी सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के साधन के रूप में देखते थे। दूसरी ओर, रॉय का मानना था कि धर्म सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणा का स्रोत हो सकता है। मार्क्स का मानना था कि राज्य उत्पीड़न का साधन है, जबकि रॉय का मानना था कि राज्य सामाजिक परिवर्तन प्राप्त करने का साधन हो सकता है। मार्क्स परंपरा के आलोचक थे, इसे दमनकारी सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के साधन के रूप में देखते थे। दूसरी ओर, रॉय का मानना था कि परंपरा सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणा का स्रोत हो सकती है।

मार्क्स ने अलगाव को पूंजीवाद के परिणाम के रूप में देखा, जबकि रॉय ने अलगाव को दमनकारी सामाजिक मानदंडों के परिणाम के रूप में देखा। मार्क्स का मानना था कि पूंजीवाद के उन्मूलन के माध्यम से अलगाव को दूर किया जा सकता है, जबकि रॉय का मानना था कि व्यक्तिगत पहल और मानवीय रचनात्मकता के माध्यम से अलगाव को दूर किया जा सकता है। मार्क्स का मानना था कि मानव प्रगति वर्ग संघर्ष के माध्यम से प्राप्त होती है, जबकि रॉय का मानना था कि मानव प्रगति व्यक्तिगत पहल और मानव रचनात्मकता के माध्यम से प्राप्त होती है।

मार्क्स और रॉय के मानवतावाद के बीच समानताएँ और अंतर मानवतावादी विचार की जटिलताओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। जबकि दोनों विचारकों ने मानवतावाद के प्रति प्रतिबद्धता साझा की, उनके विचार महत्वपूर्ण तरीकों से भिन्न थे। मार्क्स का मानवतावाद पूंजीवाद की उनकी आलोचना और सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए वर्ग संघर्ष की शक्ति में उनके विश्वास में गहराई से निहित था। वैज्ञानिक ज्ञान की निरन्तरता विज्ञान की मूल विशिष्टता है। आने वाली नयी पीढ़िया और उदित होने वाले नये समाज पिछली वैज्ञानिक उपलब्धियों को छोड़ नहीं देते, बल्कि उन्हें ग्रहण करते है और नयी व्यावहारिक जरूरतों के अनुसार उन्हें और विकसित करते है।[6] दूसरी ओर, रॉय का मानवतावाद अधिक व्यक्तिवादी था, रॉय कहते हैं कि आधुनिक काल में विज्ञान ने मनुष्य के स्वरूप से सम्बन्धित सभी मिथ्या, धारणाओं का निराकरण कर दिया है, फलतः मानववादी चिन्तन अपने अन्तर्विरोधों एवं दोषों से मुक्त होकर वैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित हो गया है। इसी विज्ञान प्रतिष्ठित मानववादी चिन्तन का ही नाम मानवतावाद है।[7] जो सामाजिक परिवर्तन लाने में व्यक्तिगत पहल और मानवीय रचनात्मकता के महत्व पर जोर देता था। इन मतभेदों के बावजूद, दोनों विचारकों ने मानव स्वतंत्रता और गरिमा के प्रति प्रतिबद्धता साझा की। उनका मानना था कि मनुष्य में एक बेहतर दुनिया बनाने की क्षमता है, और यह क्षमता दमनकारी सामाजिक प्रणालियों द्वारा दबा दी जाती है। मार्क्स और रॉय के मानवतावाद के बीच समानताएँ और अंतर मानवतावादी विचार को आकार देने में संदर्भ के महत्व को भी उजागर करते हैं। मार्क्स के विचारों को उनके समय के यूरोपीय संदर्भ ने आकार दिया था, जबकि रॉय के विचारों को उनके समय के भारतीय संदर्भ ने आकार दिया था। इसके अलावा, मार्क्स और रॉय के मानवतावाद के बीच तुलना समकालीन समाज में मानवतावादी विचार की निरंतर प्रासंगिकता को उजागर करती है। जैसा कि हम 21वीं सदी में नई चुनौतियों और अवसरों का सामना कर रहे हैं, मार्क्स और रॉय के विचार मानव द्वारा एक बेहतर दुनिया बनाने की क्षमता के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं दोनों की मानवतावाद के बीच तुलना विभिन्न मानवतावादी परंपराओं के बीच संवाद और आदान–प्रदान के महत्व को उजागर करती है। एक–दूसरे के विचारों से जुड़कर और उनसे सीखकर, मानवतावादी मानवतावादी विचारों की जटिलताओं के बारे में अपनी समझ को गहरा कर सकते हैं और मानव द्वारा एक बेहतर दुनिया बनाने की क्षमता के बारे में नई अंतर्दृष्टि विकसित कर सकते है। मार्क्स और रॉय के मानवतावाद के बीच समानताएं और अंतर सामाजिक परिवर्तन लाने में मानव एजेंसी के महत्व की एक शक्तिशाली याद दिलाते हैं। चाहे वर्ग संघर्ष के माध्यम से हो या व्यक्तिगत पहल के माध्यम से, मनुष्य के पास अपने भाग्य को आकार देने और एक बेहतर दुनिया बनाने की शक्ति है। मार्क्स और रॉय के मानवतावाद के बीच तुलना मानवतावादी विचारों की जटिलताओं की एक समृद्ध और सूक्ष्म समझ प्रदान करती है।

संदर्भ सूची

1. जेना, के.सी. (1977). कान्ट्रीब्यूश्न ऑफ मानवेन्द्रनाथ राय टू पोलिटिकल फिलोसॉफी" एस०चन्द एण्ड लि० रामनगर, नई दिल्ली पृ०सं0147
2. जैन, पी.सी. (2003). आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन" राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृ०सं०399–400
3. राय, एम.एन, (1984). "इन मैनस ओन इमेज' रेनशां पब्लिशर्स, कलकत्ता,पृ०सं०70–71
4. करेफ, एम (1971). इन सर्फ ऑफ ह्यूमन सोसाइटी, सोसलिस्ट ह्यूमनिज्म पब्लिशर,इंग्लैंड पृ०सं० 5–6
5. मिल्स, सी आर (1973). दी मार्क्सिस्ट्, आइडियल्स एण्ड आइडियो लाजिक्स पेंग्विन बुक्त, इंग्लैण्ड, पृ०सं027
6. अफनास्येव, बी (1977). मार्क्सवादी दर्शन, पी०पी०एच०, नई दिल्ली ,पृ० 345
7. राय, एम. एन. (1981). "न्यू ह्यूमेनिज्म" अजन्ता पब्लिकेशंस, जवाहर नगर दिल्ली, पृ0सं0105